हेमवती नन्दन बहुगुणा उत्तराखण्ड चिकित्सा शिक्षा विश्वद्यिालय के पंचम दीक्षान्त समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(30 नवम्बर 2022)

जय हिन्द!

उत्तराखण्ड चिकित्सा शिक्षा विश्वविद्यालय के पंचम दीक्षान्त समारोह में सम्मलित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

आज के इस दीक्षान्त समारोह में 270 एम0बी0बी0एस0, 54 एम०डी०, एम०एस0 उपाधियां प्रदान की गयी हैं। साथ ही 709 नर्सिंग, 313 पैरा मेडिकल और 09 एमफिल छात्र–छात्राओं को भी उपाधि प्राप्त हुई हैं। और इन्ही में से 34 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने गोल्ड मैडल भी प्राप्त किये हैं।

मैं उपाधि और मैडल प्राप्त करने वाले आप सभी विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

उपाधियां और मेडल प्राप्त करना कोई एक दिन का कार्य नहीं होता है, इन्हे सतत परिश्रम और बुद्धिमत्ता के बल पर अर्जित किया जाता है। इसमें माता–पिता, शिक्षकों और गुरूजनों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इस लिए इस अवसर मैं आपके माता–पिता और गुरूजनों को भी बहुत–बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों के लिए जीवन का एक महत्वपूर्ण दिन होता है। इस दिन एक ओर आप अपने विद्यार्थी जीवन में किये गये परिश्रम का फल प्राप्त करते हैं वहीं दूसरी ओर अपने व्यवहारिक जीवन में प्रवेश करते हैं।

इस लिए मैं आपको स्मरण कराना चाहता हूँ, कि यह मात्र एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं है, अपितु राष्ट्र के लिए अपनी सर्वोच्य सेवाएं देने के लिए संकल्प लेने का समय है।

आप सभी सौभाग्यशाली हैं कि आप आजादी के 75 वर्षों के बाद और आजादी के शताब्दि वर्ष के बीच इन 25 वर्षों में देश की सेवा करेंगे।

अमृत काल के ये 25 वर्ष भारत स्वर्णिम भविष्य की दिशा तय करने वाले होंगे और विकसित भारत के लक्ष्यों को हमने इन्ही 25 वर्षों के बीच अर्जित करना है।

इस लिए मैं आप सभी नौजवानों से आग्रह करता हूँ, कि आप चिकित्सा क्षेत्र में ऐसे कीर्तिमान स्थापित करें जो भारत को विकसित भारत के महान स्वप्न को शीघ्र पूर्ण कर सके।

आप समाज और राष्ट्र निर्माण में नेतृत्व प्रदान करें। स्वयं के परिवार और राष्ट्र के उत्थान के लिए अपने ज्ञान और कौशल का उपयोग करें। भारत के उस महान संकल्प को पूरा करें जिसे हर भारतीय सदियों से प्रार्थना करता आया है, और वह संकल्प है–

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तुनिरामयाः।

सर्वेभद्राणिपश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थात सभी सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी भला देखें, किसी को भी दुःख न हो।

हमारे ऋषियों–मुनियों के द्वारा जो सपना देखा गया था, उसे हजारों सालों के बाद अब सच में पूरी तरह से पूर्ण करने की जिम्मेदारी आप सभी युवाओं के कंधों पर है।

आप सभी में वो सामर्थ्य है। आप ऐसा कर सकते हैं। आज ऐसा हो सकता है। इस लिए मैं आपको इस महान संकल्प की याद दिला रहा हूँ।

आज टैक्नॉलोजी का युग है। आर्टिफिसियल इंटेलिजैंस, ड्रोन टैक्नॉलाजी, रोबोटिक्स, साईबरस्पेश, टेलीमेडिसिन और ऐसे ही असंख्य अनुसंधान चिकित्सा के क्षेत्र में हों जिसका नेतृत्व भारत के हाथों में हो

भारतीयों के हाथों में हो। अपनी विद्या, बुद्धि, विवेक, विचारों को भारत की समृद्धि और भारत के वैभव के लिए प्रयोग करें।

चिकित्सा क्षेत्र में हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौतियां हैं। हमें इस क्षेत्र में बड़ा नेतृत्व करना होगा। चिकित्सा को जनसुलभ और पूर्ण समाधान की ओर आगे ले के जाना होगा। चिकित्सा का क्षेत्र समाज की सच्ची सेवा करने का सबसे बड़ा माध्यम है।

हमें अच्छे स्वास्थ्य सेवाओं को जन–सुलभ और सर्वसुलभ बनाने की दिशा में काम करना होगा। चिकित्सा तंत्र को दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों तक सुलभ बनाना होगा। गरीबों और अमीरों को समान चिकित्सा उपलब्ध कराना विकसित भारत का महान लक्ष्य है।

ये कोई सैद्धान्तिक बातें नहीं है। भारत ऐसा कर रहा है और कर सकता है। आज देश में अनेक चिकित्सा संस्थान खुलते जा रहे हैं। एम्स और ऐसे ही बड़े बड़े प्रतिष्ठान तैयार हो रहे हैं। आप अपने शोध, नवाचार के बल पर अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य सेवाओं को पहुंचाने का उपयोग करें। सरकारें चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ा कदम उठा रही हैं। कोविड–19 को भारत ने जिस कुशलता से हैंडिल किया है, वह भारत के लोगों की क्षमता और प्रतिभा को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

हमने अपने देश की आजादी के इन 75 वर्षों में बहुत सी उपलब्धियों को अर्जित किया है। पिछले आठ–दस सालों में देश ने एक नयी दिशा में अपना विचार प्रवाह आगे बढ़ाया है। तरक्की की नयी मिशाल लिखी है। लेकिन यह बहुत कम है। आज के युवाओं के संकल्प ओर महान भारत की आकांक्षाएं और अपेक्षाएं बहुत बड़ी हैं।

हमें अपने देशवासियों की हर आकांक्षा और अपेक्षा पर खरा उतरने का प्रयत्न करना होगा। और चिकित्सा पेशे से जुड़े युवा बहुत प्रतिभा सम्पन्न होते हैं, इसलिए हमें आपसे अपेक्षाएं भी कुछ ज्यादा ही हैं।

प्रधानमंत्री श्रीनरेन्द्र मोदी जी ने इस आजादी के अमृत महोत्सव पर चार प्रण दिये हैं। हम भी उन पांच प्रणों को पूर्ण करने के लिए उन्हे जीवन में धारण करना होगा।

ये पांच प्रण हमें हमारी आजादी और समृद्धि के सच्चे प्रतिविंब हैं। हम **विकसित भारत** का प्रण, **गुलामी के अहसास से आजादी** का प्रण, भारत की महान **विरासत पर गर्व** करने का प्रण, **एकता और एकजुटता** का प्रण और **कर्तव्यों का पालन** करने का प्रण।

ये वे पांच प्रण हैं जो हमें हमारे राष्ट्र के रूप में विकसित और महान बना सकते हैं। ये एकता, संकल्प और कर्तव्य ये तीन शक्तियां हमें विकास के महान लक्ष्य तक ले जा सकती हैं।

हमें अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए उसी युद्ध स्तर पर डटे रहना होगा। जिस युद्धस्तर पर हमने COVID–19 जैसी महामारी के विरूद्ध सफल विजय अभियान चलाया था।

प्रिय विद्यार्थियों, नये–नये शोधों के सामने आने से ही चिकित्सा क्षेत्र का विस्तार होंगा और हमे निश्चित करना है कि इनका लाभ समस्त जनता तक पहुंचाना होगा। शोध एंव तकनीक सही अर्थ में तभी उपयोगी होते हैं जब उस का लाभ समस्त नागरिकों को मिले। इसे चरितार्थ करने में विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

हमारा सपना उत्तराखण्ड प्रदेश को भी एक स्वस्थ ओर विकसित प्रदेश बनाने के लिए कार्य करना होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सब अपने अकादमिक ज्ञान और अनुसंधान के बल पर यह सब कर सकते हैं।

यह विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में नेतृत्व कर रहा है यह बहुत ही हर्ष और प्रसन्नता की बात है। विश्वविद्यालय ने अनुसंधान प्रकोष्ठ की स्थापना कर दी है। इस विश्वविद्यालय ने देश के प्रमुख स्वास्थ्य देखभाल

संस्थानों के साथ सतत शिक्षा कार्यक्रम के रूप में कौशल विकास पाठ्यक्रमों को अपनाया है।

इसी प्रकार एन०सी०डी०सी० नई दिल्ली के सहयोग के साथ मास्टर इन एप्लाईड इपिडिमियोलोजी (Master in Applied Epidemiology) पाठ्यक्रम शुरू हो गया है।

इसी के साथ विश्वविद्यालय द्वारा अस्पताल प्रशासन, सार्वजनिक स्वास्थ्य पाठ्यक्रम जैसे स्नातकोत्तर कार्यक्रम शुरू किए जाने पर विचार कर रहा है।

किसी भी विश्वविद्यालय को अपनी अकादमिक स्तर को उच्च स्तर पर रखने के लिए प्रयासरत रहना होता है। मुझे हर्ष है कि विश्वविद्यालय ने इस वर्ष इस दिशा में अग्रसर होते हुये विभिन्न कॉन्फरेन्स्स, वर्कशाप एवं सेमिनार आयोजित किये।

इनमें मैनजमेंट डेवेलपमेंट प्रोग्राम, नेशनल क्वालिटी एशोयरेंस प्रोग्राम, एनॉटमी की राष्ट्रीय कॉनफरन्स नेत्र विभाग की कॉन्फरन्स् आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिससे राष्ट्रीय एवं राज्य के विभिन्न स्थानों से आये चिकित्सको एवं वैज्ञानिको ने अपने अनुभव एवं ज्ञान से हमारे विश्वविद्यालय के चिकित्सकों से साझा किये।

इस प्रकार के आयोजन सदा ही हमारे अकादमिक स्तर को ऊंचा करते हैं। मुझे जानकर हर्ष है कि विश्वविद्यालय द्वारा कई रिर्सच कार्य चल रहे है। विश्वविद्यालय के विद्वान संकाय सदस्यों एवं मेधावी छात्र–छात्राओं द्वारा लगातार शोध पत्र विभिन्न भारतीय एवं अंर्तराष्ट्रीय चिकित्सिय जर्नलस में प्रकाशित किये जा रहे हैं।

स्नातक एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों से सदा ही ये अपेक्षा होती है कि वो निरंतर स्वास्थ्य सेवाओं का स्तर उच्चतर बनाने एवं इस पर्वतीय राज्य के दूरस्थ स्थानों तक पहुचाने में प्रयासरत रहे।

मेरी अपेक्षा है कि आप उत्तराखण्ड की लोक–संस्कृति को गहराई से समझे और उसे आत्मसात करें, आप स्थानीय लोक–भाषाओं को सीखने और संवाद का कौशल अर्जित करें। हमारे प्राचीन ज्ञान–विज्ञान को समझने के लिए संस्कृत भाषा और उसमें निहित भारत की प्राचीन स्वास्थ्य विद्याओं को भी समझने का प्रयास करें कि किस प्रकार हम एक जीवन प्रबंधन में उत्कृष्ट आयाम दुनिया को दे सकते हैं।

योग, आयुर्वेद, मर्म, प्राकृतिक चिकित्सा और ऐसी ही अनेक विद्याएं भारतीय परम्परा में विद्यमान हैं। एक डाक्टर सर्वज्ञाता होना ही चाहिए। अपने देश की महानतम विरासत को भी आप जैसे बौद्धिक युवा ही अच्छी प्रकार से समझ सकत`हैं।

इसी प्रकार न्यू टैक्नॉलाजी के क्षेत्र में भी हमें आगे रहना होगा। इस दिशा में विश्वविद्यालय के द्वारा जो कम्प्यूटर, योग, खेल और भाषा के एक माह के विशेष कोर्स कराये जा रहे हैं मैं उनके लिए आपको और विश्वविद्यालय के कुलपति जी को बधाई देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षा का यह नया मॉडल निश्चित रूप से छात्रों को नए विकास में सक्षम बनाने और जीवन में चुनौतियों का समाना करने में एक नया अनुभव देगा।

क्रीडा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से आपने उत्तराखण्ड के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों के छात्र–छात्राओं के साथ संवाद और समन्वय बनाया इसके लिए आप सबको बधाई देता हूँ। इन प्रयासों के लिए विश्वविद्यालय की सराहना करता हूँ।

चिकित्सा के क्षेत्र में हम देश की सच्ची सेवा से जुड़ते हैं। एक सेना के जवान के रूप में जब हम सीमा पर देश की रक्षा कर रहे होते हैं तो एक चिकित्सक के रूप में देश के उस नागरिक की रक्षा कर रहे होते हैं जो हमारे देश के प्राण हैं।

मुझे बहुत प्रसन्नता है कि इस वर्ष चार विशिष्ट विद्वानों को मानद उपाधि से सम्मानित किया जा रहा है।

प्रोफेसर डॉ० राज कुमार शर्मा, डी०एस०सी मानद उपाधि, डॉ० ले0 जनरल वेद चतुर्वेदी, डी०एस०सी–मानद उपाधि, श्रीमती ललिता बिष्ट, पी०एच०डी–मानद उपाधि एवं श्रीमती लीला मसीह पी०एच०डी–मानद उपाधि को सम्मानित किया जा रहा है, उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्वानों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

और अन्त में मैं आप सब उन गुरूजनों को तहेदिल से बधाई देता हूँ जिन्होने आज के हमारे इन विद्यार्थियों को अपने ज्ञान और प्रतिभा के बल अपने जैसा ही काबिल बना दिया है।

आज से वे भी आपकी बराबरी के स्थान पर आ गये हैं लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि गुरू से बड़ा इस दुनियां में कोई भी नहीं है। ऐसे सभी गुरुजनों को नमन करने के साथ ही अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

जय हिन्द।